हम किसी से कम नहीं

वो ऊँची इमारतों, पहाड़ों से कूद जाती हैं। उनकी कूद से काँच किरचें-किरचें हो बिखर जाता है। भयानक आग में कभी अकेले, कभी गाड़ी समेत कूद पड़तीं हैं। घोड़े हों या मोटर साइकल, ऐसे दौड़ाती हैं कि बस साँसें ही रुक जाएँ। हम दम साधे देखते हैं। हाथ-पाँव भींचे। दिल उनकी खैर मनाने लगता है। और फिर "उनका" चेहरा दिखता है। शुक्र है सब ठीक-ठाक है।

यह ठीक-ठाक बचा चेहरा और अभी-अभी करतब दिखा गया शख्स एक नहीं है। अपनी जान जोखिम में डाल खौफनाक करतब करने वाली स्टंट-महिलाएँ दरअसल हीरोइनों की डुप्लीकेट होती हैं।

स्टंट या खतरनाक दृश्य करना कोई नया काम नहीं है। 1930-40 के ज़माने में *हंटरवाली* और *तूफान मेल* जैसी फिल्मों में नाडिया के ज़बरदस्त तेवर देख लोग अचम्भित रह जाते थे। ये करतब या तो नाडिया खुद कर रही होती थीं या कैमरे का कमाल था। अब हमारे पास उस ज़माने से कहीं ज़्यादा एडवांस कैमरे, कम्प्यूटर, टेक्नॉलॉजी है। फिल्मवाले उनसे जो चाहें दिखा सकते हैं। लेकिन मुश्किल सीन को ज़्यादा वास्तविक, ज़्यादा प्रभावी दिखाने के लिए फिल्म व विज्ञापनों के डायरेक्टर इंसानों से ही वो करामातें करवाते हैं।

26 साल की स्टंट महिला नेहा टण्डन कहती हैं कि जब मैं हर सुबह अपने दो बच्चों को घर पर छोड़ शूटिंग के लिए निकलती हूँ तो खुद अपनी खैर मनाती जाती हूँ। 19 साल की सलमा के पिता फिल्मों में स्टंटमैन थे – अलिम "सैण्डो" शेख। सलमा ने दसवीं पास करने के बाद पढ़ने से इंकार कर दिया। वो पुलिस या आर्मी में जाना चाहती थी। कुछ लीक से हटकर करना चाहती थी। "पिताजी ने मुझे मेरे भाइयों की तरह ही वो सब करने दिया जो मैं करना चाहती थी।" सलमा बिपाशा बसु, दीपिका पाडुकोण, प्रियंका चोपड़ा आदि की डुप्लीकेट बन चुकी हैं। सलमा और सनोबर (भविष्यवक्ता बेजान दारूवाला की बेटी) 14 -15 साल की उम्र से यह काम कर रही हैं।

शोले में बसन्ती (हेमा मालिनी) बनी रेश्मा कहती हैं कि इतने खतरनाक काम के लिए मेहनताना बेहद कम मिलता है। हमारे ज़माने में तो कोई बीमा या सुरक्षा नहीं मिलती थी। अब इसका इन्तज़ाम हुआ है। इसकी खासी ज़रूरत भी है। हीरो-हीरोइन तो एक उम्र हो जाने के बाद बाप-माँ-मामी-दादा बन काम जारी रखते हैं। अमिताभ बच्चन, हेमा मालिनी, जया भादुड़ी को देखो। पर हम जो एक बार करतब दिखाने के काबिल न बचे तो हमारा फिल्मी कैरियर खत्म।

"मेहनत हमारी और नाम किसी और का सोचकर कभी-कभी बुरा लगता है। फिर साथी कलाकारों से मिली तारीफ, इज़्ज़त देख खुशी भी बहुत मिलती है। वो उनका काम, यह हमारा काम।" "खतरे तो हर जगह हैं, पता नहीं कहाँ, कैसे-कैसे खतरे। उनसे डर लगता है। पर ये तो सामने हैं खुल्लम खुल्ला। इनसे क्या डर...।"

सनोबर

रेशमा